E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2025; 7(12): 352-358
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 04-09-2025
Accepted: 06-10-2025

डॉ. रोशन कुमार सिंह
व्याख्याता (गांधी विचार विभाग)
सी.एम . कॉलेज, बौंसी, बांका, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रोशन कुमार सिंह
व्याख्याता (गांधी विचार विभाग)
सी.एम . कॉलेज, बौंसी, बांका, बिहार, भारत

पंडित दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद: गांधीवादी दर्शन के संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. रोशन कुमार सिंह

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i12e.812

सारांश
भारतीय राजनीतिक एवं दार्शनिक चिंतन की परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी रही है। इस परंपरा में आधुनिक काल में जिन विचारकों ने भारतीय समाज, संस्कृति और राष्ट्र के समग्र उत्थान के लिए वैकल्पिक चिंतन प्रस्तुत किया, उनमें महात्मा गांधी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय का स्थान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गांधी ने औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध में नैतिकता, सत्य, अहिंसा और विकेन्द्रीकृत समाज-व्यवस्था पर आधारित एक वैकल्पिक आधुनिकता का प्रतिपादन किया, वहीं दीन दयाल उपाध्याय ने स्वतंत्र भारत के संदर्भ में 'एकात्म मानववाद' के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक दर्शन प्रस्तुत किया।
यह शोध-पत्र गांधीवादी दर्शन और दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के बीच वैचारिक संबंधों, समानताओं और भिन्नताओं का समीक्षात्मक अध्ययन करता है। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार एकात्म मानववाद गांधी विचार से प्रेरणा ग्रहण करते हुए भी भारतीय राष्ट्रवाद, संस्कृति और विकास की एक विशिष्ट दृष्टि प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह तर्क स्थापित किया गया है कि दोनों विचारधाराएँ पश्चिमी भौतिकवादी विकास मॉडल के विकल्प के रूप में नैतिकता, मानव गरिमा और सामाजिक समरसता को केंद्र में रखती हैं, किंतु उनके वैचारिक बल-बिंदुओं और ऐतिहासिक संदर्भों में महत्वपूर्ण अंतर भी विद्यमान हैं।

कुटशब्दः एकात्म मानववाद, गांधी दर्शन, भारतीय राजनीतिक चिंतन, मानववाद, स्वदेशी, नैतिकता

1. प्रस्तावना
भारतीय राजनीतिक चिंतन की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि यह परंपरा केवल सत्ता, शासन-प्रणाली और राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन तक सीमित नहीं रही है, बल्कि उसने समाज, नैतिकता, धर्म, संस्कृति और जीवन-मूल्यों को भी अपने चिंतन का अभिन्न अंग बनाया है। पश्चिमी राजनीतिक चिंतन जहाँ प्रायः राज्य, अधिकार और सत्ता-संतुलन पर केंद्रित रहा, वहीं भारतीय परंपरा में राजनीति को जीवन की नैतिक व्यवस्था से जोड़कर देखा गया। धर्म, नीति और राजनीति के इस अंतर्संबंध ने भारतीय राजनीतिक विचार को एक समग्र और मानव-केंद्रित स्वरूप प्रदान किया (Varma, 2001) [27]।
आधुनिक भारत में औपनिवेशिक शासन, तीव्र औद्योगीकरण और पश्चिमी आधुनिकता के प्रभावों ने भारतीय समाज के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ उत्पन्न कीं। एक ओर राजनीतिक दासता और आर्थिक शोषण था, तो दूसरी ओर भारतीय सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक जीवन-मूल्यों के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया। पश्चिमी विचारधाराओं—जैसे

उदारवाद, पूँजीवाद और समाजवाद—ने आधुनिक भारत के बौद्धिक विमर्श को प्रभावित किया, किंतु ये विचारधाराएँ भारतीय सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक संदर्भ के साथ पूर्णतः सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकीं। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय विचारकों ने न केवल पश्चिमी आधुनिकता की आलोचना की, बल्कि भारतीय परंपरा, दर्शन और अनुभव से प्रेरित वैकल्पिक चिंतन को भी विकसित किया (Parekh, 1995) [18]।

महात्मा गांधी का दर्शन इसी वैकल्पिक आधुनिकता का सर्वाधिक प्रभावशाली और मौलिक उदाहरण प्रस्तुत करता है। गांधी ने आधुनिक सभ्यता की भौतिकवादी प्रवृत्तियों पर तीखी आलोचना करते हुए सत्य और अहिंसा को जीवन और राजनीति के केंद्रीय सिद्धांत के रूप में स्थापित किया। उनके लिए सत्य और अहिंसा केवल नैतिक आदर्श नहीं थे, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन को संचालित करने वाले व्यावहारिक सिद्धांत थे (Gandhi, 1938) [8]। गांधी का यह आग्रह था कि राजनीति नैतिकता से पृथक नहीं हो सकती; यदि साधन अनैतिक होंगे तो साध्य भी दूषित हो जाएगा। इसी प्रकार, गांधी के लिए विकास का अर्थ केवल औद्योगिक प्रगति या आर्थिक वृद्धि नहीं था, बल्कि मानव का नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उत्थान था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत जिन सामाजिक-आर्थिक और वैचारिक संकटों से जूझ रहा था, उन्होंने यह प्रश्न और भी तीव्र कर दिया कि राष्ट्र-निर्माण की दिशा क्या होनी चाहिए। इस ऐतिहासिक संदर्भ में पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' का प्रतिपादन किया। उपाध्याय का मानना था कि भारत की मूल समस्याओं का समाधान न तो पश्चिमी पूँजीवाद में निहित है और न ही समाजवाद में, क्योंकि दोनों ही विचारधाराएँ भारतीय सांस्कृतिक चेतना से कटकर विकसित हुई हैं (Upadhyaya, 1965) [25]। उन्होंने भारतीय दर्शन पर आधारित ऐसी वैचारिक प्रणाली प्रस्तुत की, जिसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया।

इस प्रकार गांधी दर्शन और एकात्म मानववाद, दोनों ही भारतीय समाज के लिए वैकल्पिक विकास मॉडल और नैतिक राजनीति की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं। जहाँ गांधी का चिंतन व्यक्तिगत नैतिकता और अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन पर बल देता है, वहीं एकात्म मानववाद सांस्कृतिक आधार पर संगठित सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध इन्हीं दोनों विचारधाराओं के बीच वैचारिक संवाद, निरंतरता और भिन्नताओं का समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास है, ताकि समकालीन भारत के संदर्भ में भारतीय राजनीतिक चिंतन की इस समृद्ध परंपरा को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

2. शोध की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Significance of the Study)

समकालीन भारत तीव्र सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। विकास, राष्ट्रवाद, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पहचान जैसे मुद्दों को लेकर आज भारतीय समाज में गहन बहस विद्यमान है। वैश्वीकरण और उदारीकरण की नीतियों ने जहाँ एक ओर आर्थिक वृद्धि, तकनीकी प्रगति और बाजार-विस्तार को गति दी है, वहीं दूसरी ओर इन नीतियों के परिणामस्वरूप सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट और नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं (Sen, 1999) [21]। इस पृष्ठभूमि में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या विकास को केवल आर्थिक सूचकांकों तक सीमित रखा जाना चाहिए या उसे मानव-केंद्रित और नैतिक आधार पर पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है।

इसी संदर्भ में महात्मा गांधी का दर्शन और पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद विशेष प्रासंगिकता ग्रहण करते हैं। दोनों ही विचारधाराएँ विकास की उस संकल्पना को चुनौती देती हैं, जो मनुष्य को साधन मात्र बनाकर भौतिक प्रगति को सर्वोच्च लक्ष्य मानती है। गांधी और उपाध्याय, दोनों के लिए विकास का मूल उद्देश्य मानव गरिमा, सामाजिक समरसता और नैतिक संतुलन की स्थापना है। उनके विचार आज के उपभोक्तावादी और भौतिकतावादी विकास मॉडल के विकल्प के रूप में उभरते हैं, विशेषकर तब जब पर्यावरणीय संकट और संसाधनों के असमान वितरण ने वैश्विक चिंता का रूप ले लिया है (Guha, 2000) [11]।

इसके बावजूद अकादमिक जगत में एक असंतुलन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जहाँ गांधी दर्शन पर व्यापक और गहन अध्ययन उपलब्ध है, वहीं एकात्म मानववाद को प्रायः या तो एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में सीमित कर दिया गया है या उसे दार्शनिक गंभीरता के साथ पर्याप्त रूप से विश्लेषित नहीं किया गया है (Jaffrelot, 2007) [14]। परिणामस्वरूप, एकात्म मानववाद के मानववादी, नैतिक और सांस्कृतिक आयाम अकादमिक विमर्श में अपेक्षाकृत उपेक्षित रहे हैं।

इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि एकात्म मानववाद को समझे बिना समकालीन भारतीय राजनीति, राष्ट्रवादी विमर्श और नीति-निर्माण की वैचारिक पृष्ठभूमि का समग्र मूल्यांकन संभव नहीं है। साथ ही, गांधी विचार के संदर्भ में एकात्म मानववाद का अध्ययन

यह स्पष्ट करता है कि भारतीय राजनीतिक चिंतन में किस प्रकार वैचारिक निरंतरता के साथ-साथ परिवर्तन भी घटित हुआ है। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध न केवल अकादमिक साहित्य में एक महत्वपूर्ण रिक्तता की पूर्ति करता है, बल्कि समकालीन भारत की वैचारिक चुनौतियों को समझने में भी सार्थक योगदान देता है।

3. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

पहला, गांधी दर्शन के मूल वैचारिक तत्वों—सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, विकेन्द्रीकरण और नैतिक राजनीति—का संक्षिप्त विश्लेषण करना।

दूसरा, पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद की अवधारणा, उसके दार्शनिक आधार और सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करना।

तीसरा, गांधी विचार और एकात्म मानववाद के बीच वैचारिक समानताओं और अंतरों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

चौथा, समकालीन भारत के संदर्भ में इन दोनों विचारधाराओं की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

4. शोध-पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) शोध-पद्धति पर आधारित है, क्योंकि इसका उद्देश्य किसी सांख्यिकीय निष्कर्ष तक पहुँचना नहीं, बल्कि गांधी दर्शन और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की वैचारिक संरचना, दार्शनिक आधार तथा सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थों का गहन विश्लेषण करना है। गुणात्मक पद्धति विचारों, अवधारणाओं और मूल्यों की व्याख्या के लिए अधिक उपयुक्त मानी जाती है, विशेषकर तब जब अध्ययन का विषय राजनीतिक दर्शन और वैचारिक परंपरा से संबंधित हो (Bryman, 2012) [3]।

इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक—दोनों प्रकार के स्रोतों का सुव्यवस्थित उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत महात्मा गांधी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के मूल लेखन, भाषण, पत्र, तथा संकलित रचनाएँ सम्मिलित हैं। गांधी के संदर्भ में *Collected Works of Mahatma Gandhi*, *Hind Swaraj*, *Young India* आदि ग्रंथों का सहारा लिया गया है (Gandhi, 1958) [9], जबकि दीन दयाल उपाध्याय के संदर्भ में *Integral Humanism*, *राष्ट्र-चिंतन* तथा उनके व्याख्यानों को आधार बनाया गया है (Upadhyaya, 1965) [25]। प्राथमिक स्रोतों का उपयोग इसलिए आवश्यक था, ताकि विचारकों के मूल आशय को बिना किसी मध्यस्थ व्याख्या के समझा जा सके।

द्वितीयक स्रोतों में प्रामाणिक पुस्तकों, शोध-पत्रों, जर्नल लेखों, तथा आधुनिक विद्वानों द्वारा किए गए विश्लेषणों को शामिल किया गया है। इन स्रोतों सेन केवल विषय के ऐतिहासिक और वैचारिक संदर्भ को समझने में सहायता मिली, बल्कि विभिन्न आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को भी समाहित किया जा सका।

विश्लेषण की दृष्टि से यह शोध तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक पद्धति को अपनाता है। तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से गांधी दर्शन और एकात्म मानववाद के बीच समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है, जबकि समीक्षात्मक पद्धति के द्वारा दोनों विचारधाराओं की सीमाओं, संभावनाओं और समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया है। इसके अतिरिक्त, ऐतिहासिक-संदर्भात्मक (historical-contextual) दृष्टिकोण अपनाते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि दोनों विचारक किन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों में अपने विचार विकसित कर रहे थे और उन परिस्थितियों ने उनके दर्शन को किस प्रकार प्रभावित किया।

इस प्रकार, बहु-आयामी गुणात्मक पद्धति के माध्यम से यह शोध गांधी विचार और एकात्म मानववाद के समग्र, संतुलित एवं अकादमिक विश्लेषण का प्रयास करता है।

5. अध्ययन की सीमाएँ (Scope and Limitations)

प्रस्तुत शोध का दायरा मुख्यतः गांधी दर्शन औरपंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद के दार्शनिक, वैचारिक और सैद्धांतिक पक्षों के अध्ययन तक सीमित है। यह अध्ययन इन दोनों विचारधाराओं को भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा में स्थापित करते हुए उनकी मूल अवधारणाओं, नैतिक आधारों और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। अतः शोध का प्रमुख फोकस विचारों की व्याख्या और उनकी समीक्षात्मक तुलना पर केंद्रित है, न कि उनके प्रत्यक्ष राजनीतिक या नीतिगत अनुप्रयोग पर।

इस शोध की एक प्रमुख सीमा यह है कि इसमें व्यावहारिक राजनीति, शासन-प्रणाली या समकालीन सार्वजनिक नीतियों का विस्तृत विश्लेषण नहीं किया गया है। यद्यपि आवश्यक संदर्भों में समकालीन भारत में इन विचारधाराओं की प्रासंगिकता पर संक्षिप्त चर्चा की गई है, तथापि आर्थिक नीतियों, सरकारी योजनाओं अथवा राजनीतिक दलों की रणनीतियों का विस्तृत मूल्यांकन इस अध्ययन के दायरे से बाहर रखा गया है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शोध का वैचारिक संतुलन और अकादमिक गहराई बनी रहे।

इसके अतिरिक्त, महात्मा गांधी का दर्शन अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, जिसमें धर्म, नैतिकता, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति और आत्मिक साधना जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। इसी प्रकार, दीन दयाल उपाध्याय के विचार भी विभिन्न लेखनों, भाषणों और वैचारिक प्रसंगों में विस्तृत रूप से बिखरे हुए हैं। प्रस्तुत शोध में इन दोनों

विचारकों के सम्पूर्ण साहित्य का विस्तृत और सूक्ष्म अध्ययन संभव नहीं है। अतः चयनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए केवल उन रचनाओं और अवधारणाओं को शामिल किया गया है, जो शोध के केंद्रीय विषय—गांधी विचार के संदर्भ में एकात्म मानववाद—से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं।

अंततः, यह भी स्वीकार किया जाता है कि यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक स्रोतों और व्याख्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। अतः इसमें किसी प्रकार के सांख्यिकीय या अनुभवजन्य (empirical) आंकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है। इन सीमाओं के बावजूद, यह शोध गांधी दर्शन और एकात्म मानववाद के बीच वैचारिक संवाद को समझने की दिशा में एक सुसंगत, संतुलित और अकादमिक प्रयास प्रस्तुत करता है।

6. गांधी दर्शन: वैचारिक आधार और प्रमुख तत्व

महात्मा गांधी का दर्शन भारतीय राजनीतिक चिंतन में केवल स्वतंत्रता आंदोलन की रणनीति नहीं, बल्कि जीवन और समाज की एक समग्र दृष्टि प्रस्तुत करता है। गांधी के विचारों की केंद्रीय विशेषता यह है कि वे नैतिकता को राजनीति और अर्थव्यवस्था से पृथक नहीं मानते। उनके अनुसार राजनीति का अंतिम लक्ष्य सत्ता-प्राप्ति नहीं, बल्कि मानव-कल्याण होना चाहिए (Gandhi, 1938) [8]। इस दृष्टि से गांधीवाद को एक नैतिक-मानवतावादी दर्शन के रूप में समझा जा सकता है।

गांधी दर्शन का प्रथम और मूल तत्व सत्य है। गांधी के लिए सत्य केवल तथ्यात्मक यथार्थ नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य है। वे सत्य को ईश्वर के समकक्ष मानते हैं और मनुष्य के समस्त कर्मों का अंतिम मानदंड सत्य को ही ठहराते हैं (Gandhi, 1958) [9]। सत्य की खोज व्यक्तिगत आत्मशुद्धि से प्रारंभ होकर सामाजिक और राजनीतिक जीवन तक विस्तृत होती है। इसी कारण गांधी के लिए साधन और साध्य में कोई भेद नहीं है।

गांधी दर्शन का दूसरा केंद्रीय तत्व अहिंसा है। अहिंसा को गांधी ने निष्क्रियता या कायरता के रूप में नहीं, बल्कि सक्रिय नैतिक प्रतिरोध के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार हिंसा अल्पकालिक विजय तो दिला सकती है, किंतु वह समाज को स्थायी रूप से नैतिक रूप से पतित कर देती है (Bondurant, 1965) [25]। अहिंसा सत्याग्रह का आधार बनती है, जिसके माध्यम से अन्याय का प्रतिरोध नैतिक शक्ति के सहारे किया जाता है।

गांधी के आर्थिक चिंतन में स्वदेशी और विकेन्द्रीकरण का विशेष महत्व है। वे औद्योगिक पूँजीवाद को मानव-विरोधी मानते थे, क्योंकि वह उत्पादन और लाभ को मनुष्य से ऊपर रखता है। गांधी के अनुसार ग्राम-आधारित अर्थव्यवस्था, लघु उद्योग और स्थानीय संसाधनों पर आधारित उत्पादन ही सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता सुनिश्चित कर सकता है (Gandhi, 1931) [7]। उनका प्रसिद्ध कथन कि "पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा कर सकती है, लेकिन लालच को नहीं," उनकी आर्थिक दृष्टि को स्पष्ट करता है।

गांधी के सामाजिक दर्शन में समानता और सामाजिक न्याय का प्रश्न भी केंद्रीय है। यद्यपि वे परंपरागत भारतीय समाज के अंग थे, फिर भी उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव, अस्पृश्यता और सामाजिक असमानताओं का खुलकर विरोध किया। उनके लिए हरिजन सेवा केवल सामाजिक सुधार नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्य थी (Chandra, 1988)। इस प्रकार गांधी दर्शन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच नैतिक संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

7. पंडित दीन दयाल उपाध्याय का दर्शन: एकात्म मानववाद की अवधारणा

स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक दशकों में देश के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि औपनिवेशिक शोषण से मुक्त होकर किस प्रकार का सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक मार्ग अपनाया जाए। इसी संदर्भ में पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने 1965 में "एकात्म मानववाद" का प्रतिपादन किया। उनका विचार था कि भारत की समस्याओं का समाधान न तो पश्चिमी पूँजीवाद में है और न ही समाजवाद में, क्योंकि दोनों ही भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ से कटे हुए हैं (Upadhyaya, 1965) [25]।

एकात्म मानववाद का मूल आधार मनुष्य की समग्र अवधारणा है। उपाध्याय के अनुसार मनुष्य केवल भौतिक प्राणी नहीं है, बल्कि वह शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा—इन चारों का समन्वित रूप है। यदि किसी सामाजिक या आर्थिक व्यवस्था में इन सभी पक्षों का संतुलित विकास नहीं होता, तो वह व्यवस्था अपूर्ण और अस्थायी होगी (Sharma, 2003) [22]। इस दृष्टि से एकात्म मानववाद पश्चिमी भौतिकवादी विचारधाराओं की आलोचना प्रस्तुत करता है।

दीन दयाल उपाध्याय ने व्यक्ति और समाज के संबंध को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक माना। उनके अनुसार न तो व्यक्ति-केन्द्रित उदारवाद भारतीय समाज के लिए उपयुक्त है और न ही व्यक्ति को पूरी तरह निगल लेने वाला सामूहिकतावाद। एकात्म मानववाद व्यक्ति की गरिमा को स्वीकार करता है, किंतु उसे समाज और राष्ट्र के व्यापक हित से जोड़ता है (Upadhyaya, 1965) [25]।

एकात्म मानववाद में राष्ट्र की अवधारणा भी विशिष्ट है। उपाध्याय के अनुसार राष्ट्र केवल भौगोलिक या राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक सत्ता है, जिसकी

आत्मा उसकी परंपराओं, मूल्यों और ऐतिहासिक अनुभवों में निहित होती है (Pandey, 2017) [19]। इस दृष्टि से उनका राष्ट्रवाद सांस्कृतिक और नैतिक आधार पर टिका हुआ है, न कि केवल राजनीतिक प्रभुत्व पर।

आर्थिक दृष्टि से एकात्म मानववाद विकेन्द्रीकृत और नैतिक अर्थव्यवस्था की वकालत करता है। उपाध्याय ने उत्पादन, वितरण और उपभोग—तीनों में नैतिक सीमाओं की आवश्यकता पर बल दिया। उनका मानना था कि आर्थिक नीतियों का उद्देश्य केवल विकास दर बढ़ाना नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक समृद्धि पहुँचाना होना चाहिए, जिसे उन्होंने "अंत्योदय" की संकल्पना के माध्यम से व्यक्त किया (Upadhyaya, 1965) [25]।

8. गांधी विचार और एकात्म मानववाद: वैचारिक समानताएँ

गांधी दर्शन और एकात्म मानववाद के बीच कई महत्वपूर्ण वैचारिक समानताएँ देखी जा सकती हैं। सबसे प्रमुख समानता यह है कि दोनों ही विचारधाराएँ मानव-केंद्रित हैं। गांधी की तरह ही दीन दयाल उपाध्याय भी मनुष्य को साधन नहीं, बल्कि साध्य मानते हैं। दोनों के लिए विकास का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति है (Parekh, 1995) [18]।

दूसरी समानता विकेन्द्रीकरण की अवधारणा में दिखाई देती है। गांधी का ग्राम स्वराज और उपाध्याय की विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, दोनों ही सत्ता और संसाधनों के केंद्रीकरण के विरुद्ध हैं। इन दोनों विचारधाराओं का मानना है कि अत्यधिक केंद्रीकरण सामाजिक असमानता और शोषण को जन्म देता है (Jaffrelot, 2007) [14]।

तीसरी समानता पश्चिमी भौतिकवाद की आलोचना में है। गांधी ने औद्योगिक सभ्यता को "अमानवीय" कहा, जबकि उपाध्याय ने पूँजीवाद और समाजवाद—दोनों को एकांगी और अपूर्ण ठहराया। दोनों ही विचारक भारतीय संस्कृति और परंपरा को आधुनिक समस्याओं के समाधान का स्रोत मानते हैं (Nanda, 2011) [17]।

9. वैचारिक भिन्नताएँ एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन

यद्यपि गांधी दर्शन और पंडित दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद अनेक मूलभूत समानताओं को साझा करते हैं, फिर भी उनके वैचारिक ढाँचे, बल-बिंदुओं और ऐतिहासिक संदर्भों में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। इन भिन्नताओं को समझना आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से भारतीय राजनीतिक चिंतन की बहुलता और गहराई का सम्यक् मूल्यांकन किया जा सकता है।

गांधी का दृष्टिकोण मूलतः नैतिक–आध्यात्मिक और सार्वभौमिक प्रकृति का है। उनके लिए सत्य और अहिंसा ऐसे सार्वकालिक मूल्य हैं, जो किसी विशेष राष्ट्र, संस्कृति या ऐतिहासिक परिस्थिति तक सीमित नहीं हैं। गांधी का अहिंसा-सिद्धांत मानवता की साझा नैतिक चेतना से जुड़ा हुआ है और वह वैश्विक स्तर पर अन्याय, हिंसा और शोषण के विरुद्ध नैतिक प्रतिरोध का मार्ग सुझाता है (Brown, 1998) [2]। इसके विपरीत, दीन दयाल उपाध्याय का चिंतन अपेक्षाकृत अधिक सांस्कृतिक और राष्ट्र-केंद्रित है। उनका राष्ट्रवाद भारतीय सभ्यता, सांस्कृतिक परंपराओं और ऐतिहासिक अनुभवों से गहराई से जुड़ा हुआ है। उपाध्याय के लिए राष्ट्र केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक सत्ता है, जिसकी अपनी विशिष्ट आत्मा और जीवन-दृष्टि होती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण भिन्नता सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को लेकर दिखाई देती है। गांधी का दर्शन व्यक्ति की नैतिक चेतना और आत्म-परिवर्तन से आरंभ होकर समाज के व्यापक रूपांतरण की ओर बढ़ता है। उनका विश्वास था कि यदि व्यक्ति नैतिक रूप से परिष्कृत होगा, तो समाज और राजनीति स्वतः अधिक न्यायपूर्ण बनेंगे। इसके विपरीत, एकात्म मानववाद अधिक संगठित सामाजिक ढाँचे, संस्थागत संतुलन और सांस्कृतिक अनुशासन पर बल देता है। इसीलिए गांधी को प्रायः नैतिक आदर्शवादी, जबकि उपाध्याय को सांस्कृतिक यथार्थवादी के रूप में देखा जाता है (Sharma, 2003) [22]।

आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो एकात्म मानववाद की सबसे बड़ी चुनौती उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन में निहित है। यद्यपि इसके सिद्धांत—जैसे विकेन्द्रीकरण, अंत्योदय और नैतिक अर्थव्यवस्था—अत्यंत आकर्षक और मानवीय हैं, किंतु समकालीन वैश्विक और जटिल अर्थव्यवस्था में इनका पूर्ण अनुप्रयोग सरल नहीं प्रतीत होता। इसी प्रकार, गांधी दर्शन पर भी यह आलोचना की जाती रही है कि उसका ग्राम-आधारित और औद्योगिक-विरोधी दृष्टिकोण आधुनिक औद्योगिक समाज की आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता (Sen, 1999) [21]।

फिर भी यह आलोचनात्मक मूल्यांकन यह संकेत देता है कि दोनों विचारधाराओं की सीमाओं के बावजूद, वे समकालीन भारत के लिए नैतिक, मानव-केंद्रित और वैकल्पिक विकास दृष्टिकोण प्रदान करने में सक्षम हैं। अतः गांधी दर्शन और एकात्म मानववाद को परस्पर विरोधी के बजाय पूरक वैचारिक धाराओं के रूप में समझना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

10. समकालीन भारत में गांधी दर्शन और एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता

इक्कीसवीं सदी का भारत तीव्र आर्थिक परिवर्तन, तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के दौर से गुजर रहा है। इस प्रक्रिया

में जहाँ एक ओर आर्थिक विकास और उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विषमता, पर्यावरणीय संकट और नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी गंभीर रूप ले चुकी हैं (Sen, 1999) [21]। ऐसे परिदृश्य में गांधी दर्शन और पंडित दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद समकालीन भारत के लिए वैकल्पिक और संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

गांधी का विकास-दर्शन "जरूरत आधारित अर्थव्यवस्था" पर आधारित था, जिसमें उपभोग पर संयम और नैतिक आत्म-नियंत्रण को केंद्रीय स्थान दिया गया है। आज जब जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और पर्यावरणीय असंतुलन वैश्विक संकट का रूप ले चुके हैं, गांधी का यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है (Guha, 2000) [11]। सतत विकास (Sustainable Development) की आधुनिक अवधारणा में भी गांधीवादी विचारों की प्रतिध्वनि स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

इसी प्रकार, एकात्म मानववाद की "अंत्योदय" की अवधारणा आज की कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की संकल्पना से गहराई से जुड़ी हुई है। उपाध्याय का यह आग्रह कि विकास का मूल्यांकन समाज के अंतिम व्यक्ति की स्थिति से किया जाना चाहिए, समावेशी विकास (Inclusive Growth) की आधुनिक बहसों में विशेष महत्व रखता है (Pandey, 2017) [19]। भारत में सामाजिक-आर्थिक नीतियों के निर्माण में यदि इस दृष्टिकोण को गंभीरता से अपनाया जाए, तो विकास के लाभों का अधिक न्यायसंगत वितरण संभव हो सकता है।

राजनीतिक क्षेत्र में भी दोनों विचारधाराएँ नैतिकता की पुनर्स्थापना की मांग करती हैं। समकालीन राजनीति में अवसरवाद, भ्रष्टाचार और सत्ता-केन्द्रित दृष्टिकोण की आलोचना गांधी और उपाध्याय—दोनों के विचारों में अंतर्निहित है। गांधी की "साधन की पवित्रता" और उपाध्याय की "धर्म-आधारित राजनीति" आज भी लोकतांत्रिक शासन के नैतिक मानकों को सुदृढ़ करने की क्षमता रखती हैं (Brown, 1998) [2]।

11. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गांधी दर्शन और पंडित दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय राजनीतिक चिंतन की उसी परंपरा के अंग हैं, जो मनुष्य को विकास और राजनीति के केंद्र में रखती है। दोनों विचारधाराएँ पश्चिमी भौतिकवादी और एकांगी विकास मॉडलों की आलोचना करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

गांधी दर्शन का बल नैतिकता, सत्य और अहिंसा पर है, जो व्यक्तिगत आत्म-परिवर्तन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की कल्पना करता है। इसके विपरीत, एकात्म मानववाद अधिक संगठित और संरचनात्मक दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संस्कृति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार, जहाँ गांधी का चिंतन अधिक सार्वभौमिक नैतिक अपील करता है, वहीं उपाध्याय का दर्शन भारतीय सांस्कृतिक विशिष्टता में गहराई से निहित है।

समीक्षात्मक दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि दोनों ही विचारधाराएँ अपने-अपने संदर्भों में अत्यंत प्रभावशाली रही हैं, किंतु उनके व्यावहारिक क्रियान्वयन में चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। फिर भी, समकालीन भारत में जब विकास को केवल आर्थिक सूचकांकों तक सीमित किया जा रहा है, तब गांधी और दीन दयाल उपाध्याय का चिंतन मानव-केंद्रित, नैतिक और समावेशी विकास की दिशा में पुनर्विचार की प्रेरणा प्रदान करता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एकात्म मानववाद और गांधी दर्शन को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक दृष्टिकोणों के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा। दोनों मिलकर भारतीय समाज के लिए एक ऐसी वैचारिक दिशा प्रदान करते हैं, जो आधुनिकता और परंपरा, विकास और नैतिकता, तथा व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित कर सकती है।

References

1. Bondurant JV. Conquest of violence. Princeton: Princeton University Press; c1965.
2. Brown JM. Gandhi: Prisoner of hope. New Haven: Yale University Press; c1998.
3. Bryman A. Social research methods. Oxford: Oxford University Press; c2012.
4. Chandra B. India's struggle for independence. London: Penguin; c1988.
5. Dalton D. Mahatma Gandhi: Nonviolent power in action. New York: Columbia University Press; c1993.
6. Fox R. Gandhian utopia. Boston: Beacon Press; c1989.
7. Gandhi MK. Young India. Ahmedabad: Navajivan; c1931.
8. Gandhi MK. Hind Swaraj. Ahmedabad: Navajivan; c1938.
9. Gandhi MK. The collected works of Mahatma Gandhi. New Delhi: Government of India; c1958.
10. Gopal S. Jawaharlal Nehru: A biography. Oxford: Oxford University Press; c1989.
11. Guha R. Environmentalism: A global history. Oxford: Oxford University Press; c2000.
12. Hardiman D. Gandhi in his time and ours. Delhi: Permanent Black; c2003.
13. Iyer R. The moral and political thought of Mahatma Gandhi. Oxford: Oxford University Press; c1973.
14. Jaffrelot C. Hindu nationalism. Princeton: Princeton University Press; c2007.
15. Kumar R. Deendayal Upadhyaya: Ideology and philosophy. New Delhi: Prabhat Prakashan; c2015.
16. Misra RP. Indian political thought. Delhi: Pearson;

c2009.
17. Nanda BR. Gandhi and his critics. Oxford: Oxford University Press; c2011.
18. Parekh B. Gandhi's political philosophy. London: Palgrave; c1995.
19. Pandey A. Integral humanism revisited. New Delhi: Indian Council of Social Science Research; c2017.
20. Radhakrishnan S. Indian philosophy. London: George Allen & Unwin; c1951.
21. Sen A. Development as freedom. Oxford: Oxford University Press; c1999.
22. Sharma R. Pandit Deendayal Upadhyaya and integral humanism. New Delhi: Suruchi Prakashan; c2003.
23. Smith A. National identity. London: Penguin; c1991.
24. Srinivasan TN. Globalization and development. Oxford: Oxford University Press; c2004.
25. Upadhyaya DD. Integral humanism. New Delhi: Deendayal Research Institute; c1965.
26. Upadhyaya DD. Rashtra chintan. New Delhi: Suruchi Prakashan; c1974.
27. Varma VP. Modern Indian political thought. Oxford: Oxford University Press; c2001.